

गुणो । णिद्दाए विसे० । मिच्छत्तस्स असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । केवलणाणावरण० असंखे० गुणो । केवलदंसणावरण० विसेसा० । अपचचक्खाणाव० विसे० । पचचक्खाणावरण० विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । णिरयाउ० अणंतगुणो समय-पबद्धस्स संखे० भागो० । ओहिणाणावरण० संखे० गुणो । ओहिदंसणावर० विसे० । वेउन्वियसरीर० असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइयसरीर० विसे० । णिरयगई० संखे० गुणो । अजसकित्ति० विसेसा० । णवुंसयवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हास्स० विसे० । सोग० विसे० । रदि० विसे० । अरदि० विसेसा० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाणावरण० विसे० । मदिणाणावरण० विसे० । अचक्खु० विसे० । (चक्खु० विसे० ।) संजलणकसाय० अण्णदर० विसे० । णीचागोद० विसे० । साद० विसे० । असाद० विसे० । एवं णिरयगईए उक्कस्सओ पदेसउदओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए उक्कस्सओ सम्मामिच्छत्तस्स पदेसउदओ थोवो । पयलाए संखे० गुणो । णिद्दाए विसेसा० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धीका संख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्याना-वरणका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । नारकायुका अनन्तगुणा है जो समयप्रबद्धके संख्यातवें भाग प्रमाण है । अवधिज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजस शरीरका विशेष अधिक है । कार्मण शरीरका विशेष अधिक है । नरकगतिका संख्यात-गुणा है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । (चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है ।) संज्वलनकषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिमें उत्कृष्ट प्रदेशउदय समाप्त हुआ ।

तिर्यग्गतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है ।

विसे०। मिच्छत्ते असंखे० गुणो। अणंताणुबंधि० संखे० गुणो। केवलणाणावरण० असंखे० गुणो। केवलदंसणाव० विसे०। अचचक्खाणावर० विसे०। पचचक्खाण० विसे०। सम्मत्त० असंखे० गुणो। तिरिक्खाउ० अणंतगुणो। वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो। अजसगित्ति० असंखे० गुणो। इत्थि-णवुंसयवेद० संखे० गुणो। उच्चागोद० संखे० गुणो। ओरालियसरीर० असंखे० गुणो। तेजासरीर० विसे०। कम्मइय० विसे०। तिरिक्खगदि० संखे० गुणो। जसगित्ति० विसे०। पुरिसवेद० संखे० गुणो। दाणं-तरइय० विसे०। लाहंतराइय० विसे०। भोगंतराइय० विसे०। परिभोगंतराइय० विसे०। वीरियंतराइय० विसेसा०। भय-दुगुंछा० विसे०। हस्स-सोग० विसे०। रदि-अरदि० विसे०। ओहिणाणावरण० विसे०। मणपज्जव० विसेसाहिओ। ओहिदंसण० विसे०। सुदणाण० विसे०। मदिणाण० विसे०। अचक्खु० विसे०। चक्खु० विसे०। संजलणाए अण्णदरिस्से विसे०। णीचागोद० विसे०। सादासाद० दो वि तुल्ला विसे०। एवं तिरिक्खगईए उक्कस्सदंडओ समत्तो।

तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सपदेसउदओ सम्मामिच्छत्ते^२ थोवो। पयलाए संखे० गुणो। णिद्दाए विसेसाहिओ। पयलापयलाए विसे०। णिद्दाणिद्दाए विसे०। थीण-

स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है। मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है। अनन्तानुबन्धी कषायोंमेंसे अन्यतरका संख्यातगुणा है। केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है। केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है। अप्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है। प्रत्याख्यानावरणका विशेष अधिक है। सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है। तिर्यगायुका अनन्तगुणा है। वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है। अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है। स्त्री व नपुंसकवेदका संख्यातगुणा है। उच्चगोत्रका संख्यातगुणा है। औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है। तैजसशरीरका विशेष अधिक है। कामण-शरीरका विशेष अधिक है। तिर्यग्गतिका संख्यातगुणा है। यशकीर्तिका विशेष अधिक है। पुरुषवेदका संख्यातगुणा है। दानान्तरायका विशेष अधिक है। लाभान्तरायका विशेष अधिक है। भोगान्तरायका विशेष अधिक है। परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है। वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है। भय व जुगुप्साका विशेष अधिक है। हास्य व शोकका विशेष अधिक है। रति व अरतिका विशेष अधिक है। अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है। श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है। मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है। अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है। संज्वलन कषायोंमेंसे अन्यतरका विशेष अधिक है। नीचगोत्रका विशेष अधिक है। साता व असाता वेदनीय दोनोंका ही तुल्य व विशेष अधिक है। इस प्रकार तिर्यग्गतिमें उत्कृष्ट दण्डक समाप्त हुआ।

तिर्यंच योनिमतियोंमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोत्र है। प्रचलाका संख्यातगुणा है। निद्राका विशेष अधिक है। प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है। निद्रानिद्राका

गिद्धीए विसे० । मिच्छते असंखे० गुणो० । अणंताणुबंधी० संखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । तिरिक्खाउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीर० असंखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्ख-गइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्तीणं उदओ तुल्लो विसेसाहिओ । इत्थिवेद० संखे० गुणो । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतरा० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० । उच्च-णीच० उदओ तुल्लो विसे० । सादासादाणं विसे० । तिरिक्खजोणिणीसु उक्कस्सओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुसगईए उक्कस्सओ पदेसुदओ मिच्छते थोवो । सम्मामिच्छते विसे० । पयला-पयला० संखे० गुणो । णिहाणिहाए विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । अणंताणुबंधीणं

विशेष अधिक है । स्त्यानगुद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानु-बन्धिचतुष्कमें अन्यतरका संख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । तिर्यगायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामर्णशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यग्गतिका संख्यात-गुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । उच्च व नीच गोत्रका उदय तुल्य व विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । तिर्यच योनिमतियोंमें उत्कृष्ट प्रदेश उदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका संख्यातगुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगुद्धिका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरण कषायोंमें

विसे० । अपच्चक्खाणकसाएसु असंखे० गुणो । पच्चक्खाणकसाएसु विसे० । पयलाए असंखे० गुणो । णिद्दाए विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० संखे० गुणो । केवलदंसण० विसे० । मणुस्साउ० अणंतगुणो । वेउव्वियसरीरणामाए असंखे० गुणो । आहारसरीरस्स विसे० । अजसकित्तीए असंखे० गुणो । णोचागोदे संखे० गुणो । भय-दुगुंछा० असंखे० गुणो । हस्स-सोग० विसेसा० । रदि-अरदीसु विसे० । इत्थि-वेद० असंखे० गुणो । णवुंसयवेद० विसे० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोधसंज-लणाए असंखे० गुणो । माण० असंखे० गुणो । माया० असंखे० गुणो । ओरालिय-सरीरणामाए असंखे० गुणो । तेजासरीर० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुसगइ० असंखे० गुणो । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतरा० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । ओहिणाण० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिंदंसण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । जसकित्ति० विसे० । उच्चागोदे विसे० । लोहसंजलणाए विसे० । सादासादाणं विसे० । एवं मणुसगदीए उक्कस्सपदेसउदओ समत्तो ।

देवगदीए उक्कस्सओ पदेसउदओ सम्मामिच्छत्ते थोवो । पयलाए संखे० गुणो ।

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रचलाका असंख्यातगुणा है । निद्राका विशेष अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका संख्यातगुणा है । केकलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका अनन्तगुणा है । वैक्रियिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । आहारशरीरका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है । नीचगोत्रका संख्यातगुणा है । भय और जुगुप्साका असंख्यातगुणा है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिमें विशेष अधिक है । स्त्रीवेदक असंख्यातगुणा है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका असंख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । औदारिकशरीर नामकर्मका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । कर्मणशरीर नामकर्मका विशेष अधिक है । मनुष्यगति नामकर्मका असंख्यातगुणा है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मनःपयंयज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । संज्वलनलोभका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश—उदय समाप्त हुआ ।

देवगतिमें सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । प्रचलाका संख्यातगुणा है ।

णिद्वाए विसे० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० संखे० गुणो । अपच्च-
 क्खाणकसाए असंखे० गुणो । पच्चक्खाणकसाए विसे० । केवलणाण० असंखे० गुणो ।
 केवलदंसण० विसे० । सम्मत्ते असंखे० गुणो । देवाउ० अणंतगुणो । ओहिणाणावरण०
 संखे० गुणो । ओहिदंसणाव० विसे० । अजसगिति० असंखे० गुणो । इत्थिवेद० संखे०
 गुणो । भय-दुगुंछा० असंखे० गुणो । सोग० विसे० । हस्स विसे० । अरदि० विसे० ।
 रदि० विसे० । पुरिसवेद० असंखे० गुणो । कोहसंजलणाए असंखे० गुणो । माणस्स
 असंखे० गुणो । मायस्स असंखे० गुणो । लोभस्स असंखे० गुणो । वेउव्वियसरीर०
 असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । देवगई० संखे० गुणो । जसगिति०
 विसे० । दाणंतराइय० संखे० गुणो । लाहंतराइय० ♣ विसे० । भोगंतराइय० विसे० ।
 परिभोगंतरा० विसे० । विरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण०
 विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसे० । चक्खुदं० विसे० । उच्चागोद०
 विसेसाहिओ । असाद० विसे० । साद० विसे० । एवं देवगदीए उक्कस्सओ पदेसुद-
 यदंडओ समत्तो ।

असण्णीसु उक्कस्सओ पदेसुदओ पयलाए थोवो । णिद्वाए विसे० । पयलापयलाए

निद्राका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धी कषायोंमें अन्यतरका
 संख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरण कषायमें
 अन्यतरका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष
 अधिक है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । देवायुका अनन्तगुणा है । अवधिज्ञानावरणका
 संख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका असंख्यातगुणा है ।
 स्त्रीवेदका संख्यातगुणा है । भय व जुगुप्साका संख्यातगुणा है । शोकका विशेष अधिक है ।
 हास्यका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुष-
 वेदका संख्यातगुणा है । संज्वलनक्रोधका असंख्यातगुणा है । संज्वलनमानका असंख्यातगुणा है ।
 संज्वलनमायाका असंख्यातगुणा है । संज्वलनलोभका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका
 असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामंणशरीरका विशेष अधिक है ।
 देवगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । दानान्तरायका संख्यातगुणा है ।
 लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका
 विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणा विशेष अधिक है ।
 श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावर-
 णका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक
 है । असातावेदनीयका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार
 देवगतिमें उत्कृष्ट प्रदेश-उदय दण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञियोंमें प्रचलाका उत्कृष्ट प्रदेश उदय स्तोक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचला-

विसे० । णिद्वाणिद्वाए विसे० । थोणगिद्धीए विसेसा० । मिच्छत्ते असंखे० गुणो । केवलणाण० विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपच्चवखाण० विसे० । पच्चवखाण० विसे० । अणंताणुबंधि० विसे० । णिरयगई० अणंतगुणो । देवगई विसे० । मणुसगई० विसे० । देवाउ० असंखे० गुणो । णिरयाउ०* विसे० । मणुसाउ० संखे० गुणो । उच्चगोद० असंखे० गुणो । तिरिक्खाउ० संखे० गुणो । णिरय-देव-मणुसगईणं देव-णिरय-मणुसाउआणमुच्चगोदस्स य कधमसण्णीसुदओ ? ण, असण्णिपच्छा-यदाणं णेरइयादीण*मुवयारेण असण्णित्तभुवगमादो । मणुसगइपदेशोदयादो देवा-उआदीणं पदेशोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं ? ण, विगल्लिदिए मोत्तूण पयदअसण्णि-पंचिदिएसु चेव संचिददव्वगहणे तदविरोहादो । मणुसाउअउक्कस्सोदयादो उच्चा-गोद-तिरिक्खाउआणमुक्कस्सोदयस्स कुदो असंखेज्जगुणत्तं ? ण, बंधगद्धाए असंखेज्जगुणत्तेण च आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स अंतोमुहुत्तत्तमसिद्धं, एदम्हादो चेव सुत्तादो तस्स तब्भावसिद्धीदो ।

प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगुद्धिका विशेष अधिक है । मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरण-चतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबंधिचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नरकगतिका अनन्तगुणा है । देवगतिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवायुका असंख्यातगुणा है । नारकायुका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका संख्यातगुणा है । उच्चगोत्रका असंख्यातगुणा है । तिर्यगायुका संख्यातगुणा है ।

शंका— नरकगति, देवगति, मनुष्यगति, देवायु, नारकायु, मनुष्यायु और उच्चगोत्रका उदय असंज्ञी जीवोंमें कैसे सम्भव है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, असंज्ञी जीवोंमेंसे पीछे आये हुए नारकी आदिकोंको उप-चारसे असंज्ञी स्वीकार किया गया है ।

शंका— मनुष्यगतिके प्रदेशोदयकी अपेक्षा देवायु आदिकोंका प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे हो सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, विकलेन्द्रियोंको छोड़कर प्रकृत असंज्ञी पंचेन्द्रियोंमें ही संचित द्रव्यका ग्रहण करनेपर उसमें कोई विरोध नहीं है ।

शंका— मनुष्यायुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयसे उच्चगोत्र और तिर्यचायुका उत्कृष्ट प्रदेशोदय असंख्यातगुणा कैसे है ?

समाधान— नहीं, बन्धककालके असंख्यातगुणे होनेसे भी आवलीके असंख्यातवें भागके अन्तर्मुहूर्तता असिद्ध है, इसी सूत्रसे ही उसके असंख्यातगुणत्व सिद्ध है ।

* अप्रती ' णिरयगई० ' इति पाठः ।
ताप्रती ' णेरयादीण ' इति पाठः ।

* अप्रती ' णेरयदीण ', काप्रती ' णिरयादीण ',
ताप्रती ' असंखेज्जगुणत्तं ' इति पाठः ।

सव्वमेदं होदु णाम, ण उच्चागोदादो तिरिक्खाउअस्स संखेज्जगुणत्तं; संखेज्जावलियमेत्तुच्चागोदसमयपबद्धेसु [दिवड्डगुणहाणीए छिण्णेषु एगसमयपबद्धस्स असंखे० भागुवलंभादो संखेज्जावलियछिण्णतिरिक्खाउअम्हि समयपबद्धस्स संखेज्जदिभागत्तुवलंभादो । ण च उव्वेलणाचरिमफालिदव्वे वि गहिदे संखेज्जगुणत्तं जुज्जदे, तिस्से पलिदोवमस्स असंखे० भागपमाणत्तादो । जदि असण्णीसु उच्चागोदस्स उक्कस्ससंचयं करिय वाउक्काइएसुप्पज्जिय अंतोमुहुत्तुव्वेल्लणाए संखेज्जावलियमेत्तद्विदिं ठविय असण्णीसुप्पज्जिय उच्चागोदोदइल्लेसु [प्पज्जदि तो एदं घडदे । ण च उव्वेल्लणकालो जहण्णओ वि अंतोमुहुत्तमेत्तो अत्थि, एइदिएहि आदत्तं [द्विदिखंडयाणमायामस्स पलिदोवमस्स असंखे० भागणियमुवलंभादो त्ति ? ण, सयलमुदविसयावगमे पयडि-जीवभेदेण णाणाभेदभिण्णे असंते एदं ण होदि त्ति वोत्तुमसक्कियत्तादो । तम्हा सुत्ताणुसारिणा सुत्ताविरुद्धं वक्खाणमवलंबेयव्वं ।

ओरालिय० संखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसेसा० । अण्णदरवेदे विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वरि०

शंका— यह सब वैसा हो, किन्तु उच्चगोत्रकी अपेक्षा तिर्यच आयुके संख्यातगुणत्व सम्भव नहीं है; क्योंकि, संख्यात आवलियों मात्र उच्चगोत्रके समयप्रबद्धोंमें डेढ गुणहानिका भाग देनेपर एक समयप्रबद्धका असंख्यातवां भाग पाया जाता है, तथा संख्यात आवलियोंसे भाजित तिर्यच आयुमें समयप्रबद्धका संख्यातवां भाग पाया जाता है । यदि कहा जाय कि उद्वेलनाकी अन्तिम फालिके द्रव्यको ग्रहण करनेपर तिर्यच आयुके संख्यातगुणत्व बन सकता है, तो यह भी ठीक नहीं है; क्योंकि, वह (फालि) पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । यदि असंज्ञी जीवोंमें उच्चगोत्रके उत्कृष्ट संचयको करके फिर वायुकायिक जीवोंमें उत्पन्न होकर अन्तर्मुहूर्त उद्वेलना द्वारा संख्यात आवली मात्र स्थितिको स्थापित कर असंज्ञियोंमें उत्पन्न होकर उच्चगोत्रके उदय युक्त जीवोंमें उत्पन्न होता है तो यह घटित हो सकता है, परन्तु उद्वेलनाका काल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त मात्र नहीं है; क्योंकि, एकेन्द्रियोंके द्वारा प्रारम्भ किये गये स्थितिकाण्डकोके आयामके पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र होनेका नियम पाया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, प्रकृतियों और जीवोंके भेदसे नाना भेदोंको प्राप्त हुए समस्त श्रुतविषयक ज्ञानके न होनेपर 'यह नहीं हो सकता' ऐसा कहना शक्य नहीं है । इस कारण सूत्रका अनुसरण करनेवाले प्राणीको सूत्रसे अविरुद्ध व्याख्यानका अवलम्बन करना चाहिये ।

तिर्यच आयुके उत्कृष्ट प्रदेशोदयकी अपेक्षा औदारिकशरीरका उत्कृष्ट प्रदेशोदय संख्यातगुणा है । उससे तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामंशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति व अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । अन्यतर देवका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है ।

☐ अ-काप्रत्यो: ' उच्चागोदइल्लेसु- ' इति पाठः ।

☒ अ-काप्रत्यो: ' आदत्त ' इति पाठः ।

☞ का-ताप्रत्योर्नौलभ्यते वाक्यमिदम् ।

यंतराइय० विसे० । भय-दुगुंछा० विसे० । हस्स-सोग० विसे० । रदि-अरदि० विसे० । मणपज्जव० विसे० । ओहिणाण० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाणं अण्णयरस्स विसे० । णीचागोद० विसे० । सादासाद० विसेसाहिओ । एवमसणीसुक्कस्सपदेसुद-यदंडओ समत्तो ।

एत्तो जहण्णगो- जहण्णपदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अपचक्खणाण असंखे० गुणो । पचक्खणाण० विसे० । अणंताणु-बंधि० असंखे० गुणो । पयलापयला० असंखे० गुणो । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थीणगिद्धी० विसे० । केवलणाण० विसे० । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । केवलदंसण० विसे० । दुगुंछा० अणंतगुणो । भय० विसे० । हस्स० विसे० । रदि० विसे० । पुरिसवेद० विसे० । संजलणस्स अण्णदरस्स विसे० । ओहिणाण० असंखे० गुणो । ओहिदंसण विसे० । णिरयाउ० असंखे० गुणो । णेदं जुज्जदे, एइंदियसमयपबद्धमेत्तओहिदंसणावरण-जहण्णु-दयादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागेणोवट्टिदएगसमयपबद्धमेत्तणिरयाउअजहण्णुदयस्स

भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । भय और जुगुप्साका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञाना-वरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलन कषायोंमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी जीवोंमें उत्कृष्ट प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

यहां जघन्य प्रदेशोदय दण्डक अधिकार प्राप्त है । वह जघन्य प्रदेशोदय मिथ्यात्वमें स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वमें असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वमें असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्याना-वरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । प्रचलाप्रचलाका असंख्यात-गुणा है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलज्ञानावरणका विशेष अधिक है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । जुगुप्साका अनन्तगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुषवेदका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्य-तरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । नारकायुका असंख्यातगुणा है ।

शंका- यह योग्य नहीं है, क्योंकि, एकेन्द्रियके समयप्रबद्ध मात्र जो अवधिदर्शनावरणका जघन्य प्रदेशोदय है उसकी अपेक्षा अंगुलके असंख्यातवें भागसे अपवर्तित एक समयप्रबद्ध

असंखेज्जगुणत्तविरोहादो ? ण ओकड्डुक्कड्डणाए विणा अवट्ठिदट्ठिदिपदेससंतकम्मे विवक्खिदे दिवड्ठगुणहाणिभागहाहववत्तीए । ण च एसो अत्थो पारमत्थिओ, ओकड्डुक्कड्डुणाहि हेट्ठुवरि पक्खित्ते पदेसग्गणिसेगस्स असंखेज्जलोगभागहारे संते विरोहाभावादो । तम्हा उभयत्थ जदि वि भागहारो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो तो वि भागहारस्स थोवबहुत्तं सुत्तबलेण अत्रगंतव्वं ।

देवाउ० विसे० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । मणुस्साउ० विसे० । ओरालिय० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । वेउव्विय० विसे० । आहार० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसगित्ति० दो वि तुल्ला विसे० । देवगइ० विसे० । मणुसगइ० विसे० । णिरयगइ० विसे० । सोग० संखे० गुणो । अरदि० विसे० । इत्थिबेद० विसे० । णवुंसयवेद० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंत-राइय० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिआवरण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चागोदे० विसे० । णीचागोदे० विसे० । सादासादेसु० विसे० । एवमोघजहणपदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मात्र नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयके असंख्यातगुणे होनेमें विरोध है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अपकर्षण-उत्कर्षणके विना अवस्थित स्थितिवाले प्रदेशसत्कर्मकी विवक्षा होनेपर डेढ गुणहानि भागहार बन जाता है । परन्तु यह अर्थ पारमार्थिक नहीं है, क्योंकि, अपकर्षण-उत्कर्षण द्वारा नीचे ऊपर प्रक्षेप करनेपर प्रदेशाग्र सम्बन्धी निषेकका असंख्यात लोक भागहार होनेमें कोई विरोध नहीं है । इस कारण दोनों स्थानोंमें यद्यपि भागहार अंगुलका असंख्यातवां भाग है तो भी उनमें सूत्रबलसे स्तोकता व अधिकता समझनी चाहिये ।

नारकायुके जघन्य प्रदेशोदयसे देवायुका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है । तिर्यच आयुका असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुका विशेष अधिक है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजस शरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिक-शरीरका विशेष अधिक है । आहारकशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति व अयशकीर्ति दोनोंका तुल्य विशेष अधिक है । देवगतिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । नरकगतिका विशेष अधिक है । शोकका संख्यातगुणा है । अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनः र्य-यज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । उच्च-गोत्रका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार ओघ जघन्य प्रदेशोदय-दण्डक समाप्त हुआ ।

गिरयगईए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असं० गुणो । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे० गुणो० । केवलदंसणा० विसे० । पयलाए त्रिसे० । णिद्दाए विसे० । अपच्चक्खाण विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाणावरण० अणंतगुणो । ओहिदंसणावरण० विमे० । गिरयाउ० असंखे० गुणो । वेउव्विय० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसेसा० । गिरयगइ० संखे० गुणो । अजसकित्ति० विसे० । दुगुंछा० संखे० गुणो । भय० विसे० । सोग विसे० । हस्स० विसे० । अरदि० विसे० । रदि० विसे० । णवुंसयवेद० विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतरा० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतराइय० विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खुदं० विसेसा० । चक्खुदं० विसे० । संजलण० विसे० । णीचागोद० विसे० । असाद० विसे० । साद० विसेसाहिओ । एवं गिरयगईए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

तिरिक्खगईए जहण्णगो पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे०

नरकगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबंधिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । नरकायुका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष अधिक है । नरकगतिका संख्यातगुणा है । अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । अरतिका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । असातावेदनीयका विशेष अधिक है । सातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार नरकगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

तिर्यचगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा

गुणो । पयलाए विसे० । णिद्दा० विसे० । पयलापयला० विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थोणगिद्धी० विसे० । केवलदं० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंस० विसे० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । ओरालिय० असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । वेउ० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसगित्ति० विसे० । दुगुंछाए संखेज्जगुणो । भये विसे० । हस्स विसे० । सोगे० विसे० । रदि-अरदीसु विसे० । णवुंसयवेदे विसे० । इत्थि-पुरिसदेवे विसे० । दाणंतराइय० विसेसा । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतराइय० विसेसा । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदिणाण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलण० विसे० । णीचागोद० विसे० । उच्चागोद० विसेसा०, खविदकम्मंसियलक्खणेणागंतूण सण्णीसुप्पज्जिय संजमासंजमं घेत्तूण पुणा मिच्छत्तं पडिवज्जिय गुणसेडीओ गालिय पुणो वि संजमासंजम पडिवज्जिय आवलियसंजदा-

है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधि-ज्ञानावरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । तिर्यचआयुका असंख्यात-गुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कामेण-शरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । शोकका विशेष अधिक है । रति और अरतिका विशेष अधिक है । नपुंसकवेदका विशेष अधिक है । स्त्री और पुरुष वेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्यय-ज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है, क्योंकि क्षपितकर्माशिकस्वरूपसे आकर, संज्ञियोंमें उत्पन्न होकर, संयमा-संयमको ग्रहणकर, फिर मिथ्यात्वको प्राप्त होकर, गुणश्रेणियोंको गलाकर, फिरसे भी संयमा-संयमको प्राप्त होकर आवलि मात्र संयतासंयतकी उदयस्थिति यहां ग्रहण की गयी है । उच्चगोत्रके जघन्य प्रदेशोदयसे साता व असाता वेदनीयका जघन्य प्रदेशोदय विशेष अधिक है । इस प्रकार

✽ मप्रतिपाठोऽयम् । अप्रती 'दुगुंछाए० विसे० सोगे०', काप्रती 'दुगुंछाए विसेसं गए सोगे', ताप्रती 'दुगुंछाए संखेज्जगुणो । सोगे' इति पाठः ।

संजदस्स उदयट्टिदिग्गहणादो । सादासादाणं विसेसाहो । एवं तिरिक्खगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अणंताणुबंधि असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे० गुणो । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दाए विसे० । थोणगिद्धीए विसे० । केवलदंसणावरण० विसे० । अपच्चक्खाण० विसे० । पच्चक्खाण० विसे० । ओहिणाण० अणंतगुणो । ओहिदंस० विसे० । मणुस्साउअ० असंखे० गुणो । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । वेउ० विसे० । तेया० विसे० । कम्मइय० विसे० । मणुसगईए संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसेसाहियो । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसे० । अण्णदरवेदे तुल्ला विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विमे० । मणपज्जवणाणावरणे विसे० । सुदणाणावरणे विसे० । मदिआवरणे विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चणीच० विसे० । सादासाद० विसे० । आहारसरीर० असंखे० गुणो । तित्थयर० असंखे० गुणो । एवं मणुसगदीए जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

तिर्यचगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

मनुष्यगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अनन्तानुबन्धिचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञाना-वरणका अनन्तगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । मनुष्यायुका असंख्यात-गुणा है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तैजस-शरीरका विशेष अधिक है । कार्मणशरीरका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका तुल्य विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शना-वरणका विशेष अधिक है । ऊंच व नीच गोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनी-यका विशेष अधिक है । आहारकशरीरका असंख्यातगुणा है । तीर्थकरप्रकृतिका असंख्यातगुणा है । इस प्रकार मनुष्यगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

देवगदीए जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो । सम्मामिच्छत्ते असंखे० गुणो । सम्मत्ते असंखे० गुणो । अपचचक्खाणे असंखे० गुणो । पचचक्खाणे विसेसा० । अणं-
ताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाणावरणे असंखे० गुणो । पयलाए विसे० । णिद्दाए विसे० । केवलदंसं० विसे० । दुगुंछाए अणंतगुणो । भय० विसे० । हस्सं० विसे० ।
रदि० विसे० । पुरिसवेदे० विसे० । संजलणाए अण्णदर० विसे० । ओहिणाण०
असंखे० गुणो । ओहिदंसण० विसे० । देवाउ० असंखे० गुणो । वेउव्वियसरीर०
असंखे० गुणो । तेजा० विसे० । कम्मइय० विसे० । देवगइ० असंखे० गुणो । जसकित्तीए
विसे० । अजसकित्तीए विसे० । सोगे संखे० गुणो । अरदि० विसे० । इत्थिवेदं० विसे० ।
दाणंतरा० विसे० । लाहंतराइय० विसे० । भोगंतराइय० विसे० । परिभोगंतराइय०
विसे० । वीरियंतराइय० विसे० । मणपज्जव० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदि०
विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । उच्चागोदे विसे० । सादासाद० तुल्लो
विसेसाहो । एवं देवगईए जहण्णपदेसुदयदंडओ समत्तो ।

असण्णीसु जहण्णओ पदेसुदओ मिच्छत्ते थोवो सासणपच्छायदं पडुच्च उदीरणो-
दओ त्ति । अणंताणुबंधि० असंखे० गुणो । केवलणाण० असंखे० गुणो । पयला०

देवगतिमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है । सम्यग्मिथ्यात्वका असंख्यातगुणा
है । सम्यक्त्वका असंख्यातगुणा है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका असंख्यातगुणा
है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अनन्तानुबंधिचतुष्कमें अन्यतरका
असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है ।
निद्राका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । जगुप्साका अनन्तगुणा
है । भयका विशेष अधिक है । हास्यका विशेष अधिक है । रतिका विशेष अधिक है । पुरुष-
वेदका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका
असंख्यातगुणा है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । देवायुका असंख्यातगुणा है ।
वैक्रियिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष
अधिक है । देवगतिका असंख्यातगुणा है । यशकीर्तिका विशेष अधिक है । अयशकीर्तिका
विशेष अधिक है । शोकका संख्यातगुणा है । अरतिका विशेष अधिक है । स्त्रीवेदका विशेष
अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्त-
रायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक
है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मति-
ज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका
विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असाता वेदनीयका तुल्य विशेष
अधिक है । इस प्रकार देवगतिमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

असंज्ञी जीवोंमें मिथ्यात्वका जघन्य प्रदेशोदय स्तोक है, यह सासादन गुणस्थानसे
पीछे मिथ्यात्वमें आये हुए जीवकी अपेक्षा उदीरणोदय स्वरूप है । अनन्तानुबंधिचतुष्कमें

विसे० । णिद्दाए विसे० । पयलापयलाए विसे० । णिद्दाणिद्दा० विसे० । थीणगिद्धीए विसे० । केवलदंसण० विसे० । अपचचक्खाण० विसे० । पचचक्खाण० विसे० । णिरयाउ० अणंतगुणो । देवाउ० विसेसा० । तिरिक्खाउ० असंखे० गुणो । मणुसाउ० विसेसा० । ओरालियसरीर० असंखे० गुणो । तेजा० विसेसाहिओ । कम्मइय० विसे० । वेउव्विय० विसे० । तिरिक्खगइ० संखे० गुणो । जसकित्ति-अजसकित्ति० विसे० । मणुसगइ० विसे० । देवगई० विसे० । णिरयगई० विसे० । दुगुंछाए संखे० गुणो । भय० विसे० । हस्स-सोगे विसे० । रदि-अरदि० विसेसा० । अण्णदरवेदे विसे० । दाणंतराइय० विसे० । लाहंतरा० विसे० । भोगंतरा० विसे० । परिभोगंतरा० विसे० । वीरियंतरा० विसे० । मणपज्ज० विसे० । ओहिणाणा० विसे० । सुदणाण० विसे० । मदि० विसेसा० । ओहिदंसण० विसे० । अचक्खु० विसे० । चक्खु० विसे० । संजलणाए विसे० । णीचागोदे० विसे० । उच्चागोदे विसे० । सादासादाणं विसेसा० । एवमसण्णिपंचीदिएसु जहण्णओ पदेसुदयदंडओ समत्तो ।

एत्तो भुजगारपदेसउदओ । तत्थ अट्टपदं-जमेण्ह पदेसग्गमुदिण्णं तत्तो

अन्यतरका असंख्यातगुणा है । केवलज्ञानावरणका असंख्यातगुणा है । प्रचलाका विशेष अधिक है । निद्राका विशेष अधिक है । प्रचलाप्रचलाका विशेष अधिक है । निद्रानिद्राका विशेष अधिक है । स्त्यानगृद्धिका विशेष अधिक है । केवलदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अप्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । प्रत्याख्यानावरणचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नारकायुका अनन्तगुणा है । देवायुका विशेष अधिक है । तिर्यंचायुका असंख्यातगुणा है । मनुष्यायुका विशेष अधिक है । औदारिकशरीरका असंख्यातगुणा है । तैजसशरीरका विशेष अधिक है । कर्मणशरीरका विशेष अधिक है । वैक्रियिकशरीरका विशेष अधिक है । तिर्यंचगतिका संख्यातगुणा है । यशकीर्ति और अयशकीर्तिका विशेष अधिक है । मनुष्यगतिका विशेष अधिक है । देवगतिका विशेष अधिक है । नरकगतिका विशेष अधिक है । जुगुप्साका संख्यातगुणा है । भयका विशेष अधिक है । हास्य व शोकका विशेष अधिक है । रति व अरतिका विशेष अधिक है । अन्यतर वेदका विशेष अधिक है । दानान्तरायका विशेष अधिक है । लाभान्तरायका विशेष अधिक है । भोगान्तरायका विशेष अधिक है । परिभोगान्तरायका विशेष अधिक है । वीर्यान्तरायका विशेष अधिक है । मनःपर्ययज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । श्रुतज्ञानावरणका विशेष अधिक है । मतिज्ञानावरणका विशेष अधिक है । अवधिदर्शनावरणका विशेष अधिक है । अचक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । चक्षुदर्शनावरणका विशेष अधिक है । संज्वलनचतुष्कमें अन्यतरका विशेष अधिक है । नीचगोत्रका विशेष अधिक है । उच्चगोत्रका विशेष अधिक है । साता व असातावेदनीयका विशेष अधिक है । इस प्रकार असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंमें जघन्य प्रदेशोदयदण्डक समाप्त हुआ ।

यहां भुजाकार प्रदेशोदयका अधिकार है । उसमें अर्थपद कहा जाता है- इस समय

अणंतरउवरिमसमए बहुपदेसगगे उद्विदे एसो भुजगारो णाम । जमेण्हपदेसगगमुद्विदं
अणंतरउवरिमसमए तत्तो थोवदरे पदेसगगे उदयमागदे एसो अप्पदरउदओ णाम ।
तत्तिए तत्तिए चैव पदेसगगे उदयमागदे अवट्टिदउदओ णाम । अणंतरादोदसमए
उदएण विणा एण्णिमुदयमागदे एसो अवत्तव्वउदओ णाम । एद्रेण अट्टपदेण सामित्तं ।
तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगार-अप्पदर-अवट्टिदउदओ कस्स ? अण्णदरस्स ।
एवं सव्वकम्माणं । णवरि जांसि पयडीणमवत्तव्वमत्थि तं ण जाणिय वत्तव्वं ।

एयजीवेण कालो । तं जहा— मदिआवरणस्स भुजगारउदओ केवचिरं कालादो
होदि ? जहं एगसमओ, उक्कं पल्लिदो० असंखे० भागो । अप्पदरउदओ
केवचिरं ? जहं एगसमओ, उक्कं पल्लिदो० असंखे० भागो । अवट्टिदवेदगो
केवचिरं ? जहं एगसमओ, उक्कं संखेज्जा समया । सुद-मणपज्जव-ओहि—
केवलणाणावरणाणं मदिआवरणभंगो ।

(चक्खु-) अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं पि मदिआवरणभंगो । णिद्दाए अवट्टिदवेदगो
केवचिरं ? जहं एगसमओ, उक्कं संखेज्जा समया । भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं ?

जो प्रदेशाग्र उदयको प्राप्त है उससे अनन्तर आगेके समयमें बहुत प्रदेशाग्रके उदित होनेपर
यह भुजाकार प्रदेशोदय कहा जाता है । जो इस समय प्रदेशाग्र उदित है उससे अनन्तर आगेके
समयमें स्तोकतर प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर यह अल्पतर प्रदेशोदय कहलाता है । उतने
उतने मात्र प्रदेशाग्रके उदयको प्राप्त होनेपर अवस्थित प्रदेशोदय कहलाता है । अनन्तर वीते
हुए समयमें उदयके विना इस समय उदयको प्राप्त होनेपर यह अवक्तव्य उदय कहा जाता है ।
इस अर्थपदके अनुसार स्वामित्वका कथन किया जाता है । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका
भुजाकार, अल्पतर और अवस्थित उदय किसके होता है ? वह अन्यतर जीवके होता है ।
इसी प्रकारसे सब सब कर्मोंके सम्बन्धमें स्वामित्वका कथन करना चाहिये । विशेष इतना है
कि जिन प्रकृतियोंका अवक्तव्य प्रदेशोदय है उसका कथन जानकर करना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणका भुजाकार उदय
कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्लोपमके असंख्यातवें भाग
मात्र रहता है । उसका अल्पतर उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और
उत्कर्षसे पल्लोपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है । उसका अवस्थितवेदक कितने काल
रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है । श्रुतज्ञाना-
वरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलज्ञानावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञाना-
वरणके समान है ।

(चक्षुदर्शनावरण) अचक्षुदर्शनावरण, अवधिज्ञानावरण और केवलदर्शनावरणकी भी प्ररूपणा
मतिज्ञानावरणके समान है । निद्राका अवस्थितवेदक कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक
समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है । उसका भुजाकार और अल्पतर वेदक कितने काल

जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तो । एवं सेसच्चदुण्णं दंसणावरणीयपयडीणं । सोलसकसाय-हस्स-रदि-अरदि-सोग-भय-दुगुंछाणं णिहाभंगो । सादस्स भुजगार-अप्पदरउदओ केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० छम्मासा० । अवट्टिदउदओ केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० संखे० समया । असादस्स भुजगार-अप्पदरवेदगो केवचिरं० ? जह० एगसमओ, उक्क० पल्लिदो० असंखे० भागो । अवट्टिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया ।

सम्मामिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जहण्णेण एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । अवट्टिद० जह० एगसमओ, उक्क० संखेज्जा समया । सम्मत्त० भुजगारवेदग० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० छावट्टिसागरोवमाणि देसूणाणि । मिच्छत्तस्स भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमुहुत्तं । तिण्णं पि वेदाणं मदिआवरणभंगो । णिरयाउअस्स अप्पदर-अवत्तव्वपदाणि अत्थि, सेसपदाणि णत्थि । तेण तत्थ कालो सुगमो । मणुस्साउअस्स भुजगारवेदओ* जह० एगसमओ, उक्क० अंतोमु० विसेसाहियं, गोवुच्छरयणाए उक्कस्सियाए वि अंतोमुहुत्तदीहत्तादो । अवट्टिदवेदगो जह० एगसमओ, उक्क० अट्टसमया । मणुस्साउअस्स अप्पदरओ जह०

रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है । इसी प्रकार शेष चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये । सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके समान है । सातावेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास रहता है । उसका अवस्थित उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है । असाता वेदनीयका भुजाकार व अल्पतर उदय कितने काल रहता है ? वह जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात समय मात्र होता है ।

सम्यग्मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्-मुहूर्त मात्र होता है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय मात्र रहता है । सम्यक्त्व प्रकृतिका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंतर्मुहूर्त मात्र रहता है । उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे कुछ कम छयासठ सागरोपम मात्र होता है । मिथ्यात्वका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र होता है । तीनों भी वेदोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । नारकायुके अल्पतर और अवक्तव्य ये दो पद हैं, शेष पद नहीं हैं । इस कारण उसके विषयमें कालप्ररूपणा सुगम है । मनुष्यायुका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्-मुहूर्त विशेष अधिक काल तक रहता है, क्योंकि, उत्कृष्ट भी गोपुच्छरचना अंतर्मुहूर्त दीर्घ होती है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आठ समय मात्र रहता है । मनुष्यायु-

एगसमओ, उक्क० तिण्णि पलिदोवमाणि समऊणाणि । तिरिक्खाउअस्स मणुसाउअ-
भंगो । देवाउअस्स णिरयाउअभंगो ।

णिरयगइणामाए भुजगार० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो ।
अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । अवट्ठिद० जह० एग-
समओ, उक्क० संखेज्जा समया । मणुसगइ-तिरिक्खगइ-देवगइणामाणं णिरयगइभंगो ।

ओरालिय-वेउव्विय-तेजा-कम्मइयसरीराणं मदिआवरणभंगो । आहारसरीरस्स
णिद्दाए भंगो । समचउरससंठाण-वज्जरिसहणारायणसंघडण-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरु-
अलहुअ--उवघाद--परघाद--उस्सास--पसत्थापसत्थविहायगइ--तस--बादर-पज्जत्त-
पत्तेयसरीर-थिराथिर-सुहासुह-सुभग-द्वभग-सुस्सर-दुस्सर-आदेज्ज-अणादेज्ज-जसकित्ति-
अजसकित्ति-णिमिणुच्चागोद--पंचंतराइयाणं मदिआवरणभंगो । चदुसंठाण-पंचसंघड-
णाणं भुजगार-अप्पदर० जह० एगसमओ, उक्क० पुव्वकोडी देसूणा । अवट्ठिदं सुगमं । हुंड-
संठाण-णीचागोदाणं मदिआवरणभंगो । उज्जोवणामाए भुजगार-अप्पदर० जह० एगस-
मओ, उक्क० पलिदो० असंखे० भागो । आदाव-थावर-सुहुम-अपज्जत्त-साहारणाणं भुज-
गारो अप्पदरो वा उक्क० अंतोमुहुत्तं । सेसं सुगमं । एसुवदेसो णागहत्थिसमणाणं ।

का अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे एक समय कम तीन पत्योपम मात्र रहता है । तिर्यंच आयुकी प्ररूपणा मनुष्यायुके समान है । देवायुकी प्ररूपणा नारकायुके समान है ।

नरकगति नामकर्मका भुजाकार उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है । उसका अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवें भाग रहता है । उसका अवस्थित उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात समय रहता है । मनुष्यगति, तिर्यंचगति और देवगति नामकर्मोंकी प्ररूपणा नरकगतिके समान है ।

औदारिक, वैक्रियिक, तैजस और कार्मण शरीरनामकर्मोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । आहारकशरीरकी प्ररूपणा निद्राके समान है । समचतुरस्रसंस्थान, वज्रर्षभनाराच-संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास प्रशस्त व अप्रशस्त विहा-योगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति, अयशकीर्ति, निर्माण, उच्चगोत्र और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । चार संस्थान और पांच संहननोंका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय उत्कर्षसे कुछ कम एक पूर्वकोटि मात्र रहता है । उनके अवस्थित उदयकी प्ररूपणा सुगम है । हुण्डकसंस्थान और नीचगोत्रकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । उद्योत नामकर्मका भुजाकार और अल्पतर उदय जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्यो-पमके असंख्यातवें भाग मात्र रहता है । आतप, स्थावर, सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण नाम-कर्मोंका भुजाकार और अल्पतर उदय उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र रहता है । शेष प्ररूपणा सुगम है । यह उपदेश नागहस्ती श्रमणका है ।

अण्णेण ॐ उवएसेण मदिआवरणस्स भुजगारउदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसू-
णाणि सव्वट्ठे ॐ । अप्पदरवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि संखेज्जवस्सब्भहियाणि णेर-
इयस्स ॐ संकिलेसेण । सुद मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चद्रुण्णं दंसणावरणाणं
च मदिआवरणभंगो । असादस्स भुजगारवेदओ तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि ।
अप्पदर० पलिदो० असंखेज्जदिभागो । णिरयगइणामाए भुजगारवेदओ अप्पदरवेदओ
वा तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । णिरयगइणामाए अप्पदरवेदयकालस्स साहणं ॐ वुच्चदे ।
तं जहा- णिसेयगुणहाणिट्टाणाणंतरं थोवं । जोगट्टाणेषु जीवगुणहाणिट्टाणंतराणि असंखे-
ज्जगुणाणि । मणुसगइणामाए तिरिक्खगइणामाए च भुजगारो अप्पदरो ॐ च तिण्णि
पलिदोवमाणि देसूणाणि । देवगइणामाए भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो० देसू-
णाणि । ओरालियसरीर-तदंगोवंग-बंधण-संघादाणं पढमसंघडणस्स मणुसगइभंगो ।
वेउव्वियसरीर-वेउव्वियसरीरअंगोवंग-बंधण-संघादाणं देवगइभंगो । सव्वासि धुवबंध-
पयडीणं परघादुस्सास-पसत्थविहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर-थिर-सुभ-
सुभग-सुस्सर-आदेज्ज-जसकित्तीणं च देवगइभंगो । अप्पसत्थविहायगइ-अथिर-
असुभ-दुभग-दुस्सर-अणादेज्ज-जसकित्तीणं णिरयगइभंगो । उज्जोव-
णामाए ओरालियसरीरभंगो । उच्चागोद-पंचंतराइयाणं णाणावरण-

अन्य उपदेशके अनुसार मतिज्ञानावरणके भुजाकार वेदकका काल सर्वार्थसिद्धिमें कुछ कम
तेतीस सागरोपम प्रमाण है । उसके अल्पतर वेदकका काल नारकीके संक्लेशके कारण संख्यात वर्ष
अधिक तेतीस सागरोपम मात्र है । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवल-
ज्ञानावरण और चार दर्शनावरण प्रकृतियोंकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । असाता-
वेदनीयके भुजाकार वेदकका काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है । उसके अल्पतर वेदकका
काल पल्योपमके असंख्यातवें भाग मात्र है । नरकगति नामकर्मके भुजाकारवेदक व अल्पतर वेदकका
काल कुछ कम तेतीस सागरोपम मात्र है । नरकगति नामकर्मके अल्पतर वेदकके कालका साधन
कहा जाता है । वह इस प्रकार है- निषेकगुणहानिस्थानोंका अन्तर स्तोक है । योगस्थानोंमें जीव-
गुणहानिस्थानोंके अंतर असंख्यातगुणे है । मनुष्यगति नामकर्म और तिर्यचगति नामकर्मका भुजाकार
और अल्पतर उदय कुछ कम तीन पल्योपम काल मात्र रहता है । देवगति नामकर्मका भुजाकार
और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है । औदारिकशरीर व उसके
अंगोपांग, बन्धन और संघातका तथा प्रथम संहननकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है ।
वैक्रियिकशरीर, वैक्रियिकशरीरअंगोपांग, वैक्रियिकबन्धन और वैक्रियिकसंघातकी प्ररूपणा देव-
गतिके समान है । सब ध्रुवबन्धी प्रकृतियोंकी तथा परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त विहायोगति, त्रस,
बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशकीर्तिकी प्ररूपणा भी देव-
गतिके समान है । अप्रशस्त विहायोगति, अस्थिर, अशुभ, दुर्भंग, दुस्वर, अनादेय और अयश-
कीर्तिको प्ररूपणा नरकगतिके समान है । उद्योत नामकर्मकी प्ररूपणा औदारिकशरीरके समान

ॐ अप्रतो 'अणेण' इति पाठः । ॐ ताप्रतो 'देसूणाणि । सव्वट्ठे' इति पाठः । ॐ ताप्रतो 'वस्सब्भहियाणि
णेरइयस्स' इति पाठः । ॐ मप्रतो 'साहणं' इति पाठः । ॐ अ-कापत्योः 'भुजगारअप्पदरो' इति पाठः ।

भंगो । णीचागोदस्स भुजगारो अप्पदरो च तेत्तीसं सागरो० देसूणाणि । एदम्हि उवदेसे जाणि कम्माणि ण भणिदाणि तेसिं कम्माणं णत्थि दो उवदेसा, पढमेण चैव उवदेसेण❀ ताणि जेयव्वाणि ।

एयजीवेण अंतरं□ पवाइज्जंतेण उवएसेण वत्तइस्सामो । तं जहा— णाणावरणस्स भुजगारवेदयंतरं अप्पदरवेदयंतरं वा जह० एगसमओ, उक्क० पल्लिदो० असंखे० भागो । अवट्टिदवेदयंतरं जह० एयसमओ, उक्क० अणंतकालं । चदुण्णं दंसणावरणी— याणं णाणावरणभंगो । सव्वकम्माणमवट्टियवेदयंतरस्स वि णाणावरणभंगो । सेसाणं कम्माणं भुजगार-अप्पदरवेदयंतरं पगदिउदयादो भुजगारकालादो❁ च साधेदूण भाणियव्वं । णाणाजीवेहि कालो अंतरं सण्णियासो च एत्थ कायव्वो ।

एत्तो अप्पाबहुअं । तं जहा— मदिआवरणस्स अवट्टिदवेदया थोवा । अप्पदरवेदया अणंतगुणा । भुजगारवेदया संखेज्जगुणा । सुद- मणपज्जव-ओहि-केवलणाणावरणाणं चक्खु-अचक्खु-ओहि-केवलदंसणावरणाणं च मदिआवरणभंगो । णिहाए अवट्टिदवेदया थोवा । अवत्तव्ववेदया अणंतगुणा । अप्पदरवेदया असंखे० गुणा । भुजगारवेदया संखे०

है । उच्चगोत्र और पांच अन्तराय प्रकृतियोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । नीचगोत्रका भुजाकार और अल्पतर उदय कुछ कम तेतीस सागरोपम काल मात्र रहता है । इस उपदेशम जिन कर्मोंका कथन नहीं किया गया है उन कर्मोंके विषयमें दो उपदेश नहीं हैं, उनको प्रथम ही उपदेशके अनुसार ले जाना चाहिये ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तरकी प्ररूपणा प्रवाहस्वरूपसे आये हुए उपदेशके अनुसार की जाती है । वह इस प्रकार है— ज्ञानावरणके भुजाकारवेदक और अल्पतरवेदका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पत्योपमके असंख्यातवे भाग मात्र होता है । उसके अवस्थित-वेदकका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण होता है । चार दर्शनावरण प्रकृतियोंके अन्तरकालकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । सब कर्मोंके अवस्थित-वेदकके अन्तरकालकी भी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है । शेषकर्मोंके भुजाकार व अल्पतर वेदकोंके अन्तरकालका कथन प्रकृतिउदय और भुजाकारकालसे सिद्ध करके करना चाहिये । नाना जीवोंकी अपेक्षा काल, अन्तर और संनिकर्षका भी कथन यहाँपर करना चाहिये ।

यहाँ अल्पबहुत्वका कथन करते हैं । वह इस प्रकार है— मतिज्ञानावरणके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी प्ररूपणा मतिज्ञानावरणके समान है । निद्राके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं ।

❀ ताप्रतो ' चैव (दो) उवदेसेण ' इति पाठः । □ अ-काप्रत्योः ' अंतरे ' इति पाठः ।

❁ प्रतिष् ' -कालो ' इति पाठः ।

गुणा । पयला-णिहाणिहा-पयलापयला-थीणगिद्धि-सादासाद-सोलसकसाय-हस्स-रदि-
अरदि-सोग-भय-दुग्गुणं णिहाभंगो । मिच्छत्तस्स अवत्तव्वेदया थोवा । अवट्ठिदवेदया
अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । सम्मत्तस्स अवट्ठिदवेदया
थोवा । भुजगारवेदया संखे० गुणा ॐ । अवत्तव्वेदया असंखे० गुणा । अप्पदर०
असंखे० गुणा । सम्मामिच्छत्तस्स अवट्ठिद० थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा ।
अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । णवंसयवेदस्स* मिच्छत्तभंगो ।
इत्थिपुरिसवेदानं अवट्ठिदवेदया थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे०
गुणा । भुजगार० विसेसा० ।

देव-णेरइयाउआणं अवत्तव्वेदया थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । मणुसाउ-
अस्स ॐ अवट्ठिद*० थोवा । अवत्तव्वेदया असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा ।
अप्पदरवेदया संखे० ॐ गुणा । तिरिक्खाउअस्स अवत्तव्वेदया थोवा । अवट्ठिदवेदया
अणंतगुणा । भुजगारवेदया अणंतगुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

णिरयगइणामाए अवट्ठिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे०
गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । तिरिक्खगइणामाए अवत्तव्व थोवा । अवट्ठिद०
अणंतगुणा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । मणुसगइणामाए अवट्ठिद०

भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, सातावेदनीय
असातावेदनीय, सोलह कषाय, हास्य, रति, अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी प्ररूपणा निद्राके
समान है । मिथ्यात्वके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक
अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । सम्यक्त्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकार-
वेदक, संख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं ।
सम्यग्मिथ्यात्वके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक
असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । नपुंसकवेदकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान
है । स्त्रीवेद और पुरुषवेदके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं ।
अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक हैं ।

देवायु और नारकायुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं ।
मनुष्यायुके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असं-
ख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं । तिर्यचआयुके अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं ।
अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।

नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।
अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । तिर्यचगति नामकर्मके
अवक्तव्यवेदक स्तोक हैं । अवस्थितवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकार-

* सत्कर्मपंजिकायां ' असंखेज्जगुणा ' इति पाठः । ॐ अ-काप्रत्योः ' णवंसयवेदयस्स ' इति पाठः ।
ॐ ताप्रती ' असंखे० गुणा । । मणुसाउअस्स ' इति पाठः । * अ-काप्रत्योः ' उच्चा-
गोदं', ताप्रती ' उच्चागोदं (अवट्ठिद०) ' इति पाठः । ॐ सत्कर्मपंजिकायां ' असं ' इति पाठः ।

थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० विसे० । भुजगार० असंखे० गुणा । देवगदिणामाए अवट्टिद० थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसे० । ओरालियसरीर-हुंडसंठाण-परघाद-उज्जोव-उस्सास-बादर-सुहुम साहारण-जसकित्ति-अजसकित्तीणं अवट्टिद० थोवा । अवत्तव्व० अणंतगुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । वेउव्वियसरीर-समचउरससंठाणाणं देवगइभंगो ।

जाओ पयडीओ धुवबंधीओ ताणमवट्टिद्वेदया थोवा । अप्पदर० अणंतगुणा । भुजगार० संखे० गुणा । असंपत्तसेवट्टु० अवट्टिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । चट्टुण्णं संठाणाणं पंचण्णं संघडणाणं च अवट्टियं थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । णिरयाणुपुव्वीणामाए अवट्टिद० थोवा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० विसे० । अवत्तव्व० विसे० । एवं देवगइपाओग्गाणुपुव्वीणामाए । मणुस्साणुपुव्वीणामाए अवट्टियं थोवा । भुजगार० असंखे० गुणा । अवत्तव्व० विसे० । अप्पदर० विसेसा० । एवं तिरिक्खाणुपुव्वीणामाए । णवरि भुजगार० अणंतगुणा ।

आदाव-अप्पसत्थविहायगइ-दुस्सरणामाणं अवट्टिद्वेदया थोवा । अवत्त० असंखे०

वेदक संख्यातगुणे हैं । मनुष्यगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक है । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक विशेष अधिक है । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । देवगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक है । औदारिकशरीर, हुंडकसंस्थान, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, बादर, सूक्ष्म, साधारण, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । वैक्रियिकशरीर और समचतुरस्रसंस्थानकी प्ररूपणा देवगतिके समान है ।

जो प्रकृतियां ध्रुवबन्धी हैं उनके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । असंप्राप्तसृपाटिकासंहननके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । चार संस्थानों और पांच संहननोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं । नारकानुपूर्विके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक विशेष अधिक है । अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक है । इसी प्रकार देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा करना चाहिये । मनुष्यानुपूर्वी नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । अवक्तव्यवेदक विशेष अधिक है । अल्पतरवेदक विशेष अधिक है । इसी प्रकार तिर्यगानुपूर्वी नामकर्मकी प्ररूपणा है । विशेष इतना है कि उसके भुजाकारवेदक अनन्तगुणे हैं ।

आतप, अप्रशस्त विहायोगति और दुस्वर नामकर्मोंके अवस्थितवेदक स्तोक हैं ।

गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे० गुणा । थावर-दूभग-अणादेज्ज-
गीचागोदानं तिरिक्खगइभंगो । अप्पज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० अणं-
तगुणा । भुजगार० असंखे० गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा । सुस्सरणामाए अवट्ठिय०
थोवा । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा । भुजगार० संखे०
गुणा । प्पज्जत्तणामाए अवट्ठिद० थोवा । अवत्तव्व० अणंतगुणा । भुजगार० असंखे०
गुणा । अप्पदर० संखे० गुणा ।

ट्टिदीणं❀ बंधेण ओकड्डुक्कड्डुणाए (च) पदेसुदयस्स वड्ढी हाणी वा होदि,
एदेण हेट्टुणा पदेसुदयभुजगारे अण्णारिसं ❁ अप्पाबहुअं भवदि । तं जहा- णिरयग-
इणामाए थोवा अवट्ठिय० । अवत्तव्व० असंखे० गुणा । अप्पदर० असंखे० गुणा❀ ।
भुजगार० असंखे० □ गुणा । एदेण अणुमाणेण मग्गिदूण❁ सत्त्वकम्माणं णेयव्वं ।
एदं पुणो हेट्टुणा अप्पाबहुअं ण पवाइज्जदि❁ । एवं पदेसभुजगारो समत्तो ।

एत्तो पदणिक्खेवो-- मदिणाणावरणस्स उक्क० वड्ढी कस्स ? जो गुणिदकम्मंसिओ
अप्पाए सम्मत्तद्धाए संजमद्धाए च सव्वलहुं चरिमसमयछट्टुमत्थो जादो तस्स चरिम-

अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे
हैं । स्थावर, दुर्भग, अनादेय और नीचगोत्रकी प्ररूपणा तिर्यचगतिके समान है । अपर्याप्त
नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यात-
गुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं । सुस्वर नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्य-
वेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक संख्यातगुणे हैं ।
पर्याप्त नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक अनन्तगुणे हैं । भुजाकारवेदक
असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक संख्यातगुणे हैं ।

स्थितियोंके बन्ध, अपकर्षण और उत्कर्षणसे प्रदेशोदयकी वृद्धि और हानि होती है;
इस हेतुसे प्रदेशोदय सम्बन्धी भुजाकारके विषयमें अन्य प्रकार अल्पबहुत्व होता है । यथा-
नरकगति नामकर्मके अवस्थितवेदक स्तोक हैं । अवक्तव्यवेदक असंख्यातगुणे हैं । अल्पतरवेदक
असंख्यातगुणे हैं । भुजाकारवेदक असंख्यातगुणे हैं । इस अनुमानसे खोजकर सब कर्मोंके उक्त
अल्पबहुत्वको ले जाना चाहिये । परन्तु यह हेतुप्ररूपित अल्पबहुत्व परम्परागत नहीं है । इस
प्रकार प्रदेशभुजाकार समाप्त हुआ ।

यहां पदनिक्षेपकी प्ररूपणा की जाती है- मतिज्ञानावरण की उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती
है ? जो गुणितकर्मशिक जीव अल्प सम्यक्त्वकालमें और अल्प संयमकालमें शीघ्र ही अन्तिम

❀ ताप्रती ' संखे० गुणा । गुणट्टिदीणं ' इति पाठः । ❁ अ-काप्रत्योः ' भुजगारणारिसं ', ताप्रती
' भुजगार० अण्णासि ' इति पाठः । ❁ अप्रती नास्तीदं वाक्यम् । □ सत्कर्मपञ्जिकायां तु ' संखे० '
इति पाठः । ❁ प्रतिषु ' मज्झिदूण ' इति पाठः । सत्कर्मपञ्जिकायामेतस्य स्थाने ' अणुमाणेऊण ' इत्येत-
त्पदमुपलभ्यते । ❁ प्रतिषु ' पाविज्जदि ', सत्कर्मपञ्जिकायां तु ' पवाइज्जदि ' इति पाठः ।

समयछद्रुमत्थस्स पढमसमयओहिलद्धिस्स उक्क० मदिआवरणस्स पदेसुदयवड्ढी। कुदो? ओहिणाणवुड्ढीए अणहिमुहस्स* गुणसेडिपदेसगुणगारादो तदहिमुहगुणसेडिपदेस-गुणगारस्स असंखे० गुणत्तादो । कधमेदं णव्वदे? सुत्तण्णहाणुववत्तीदो । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं पुण ज्ञीयमाणोहिकखओवसमाणं* तत्तो तग्गुणयारवड्ढी असंखे० गुणा ।

एवं सुद-मणपज्जव-केवलणाणावरण-चक्खु-अचक्खु-केवलदंसणावरणाणं च वत्तव्वं । ओहिणाण-ओहिदंसणावरणाणं उक्क० वड्ढी कस्स? चरिमसमयछद्रु-मत्थस्स, जस्स पढमसमयणट्ठा ओही, तस्स । णिद्दा-पयलाणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स? उवसंतकसायस्स जाधे सगपढमसमयगुणसेडिसीसयं पवेदेदि† तस्स उक्कस्सिया वड्ढी । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुक्कस्सिया वड्ढी कस्स ? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गसंकिळिट्ठो होदूण से काले सव्वविसुद्धो जादो तस्स सव्वविसुद्धस्स जं गुणसेडिसीसयं तस्मिह उदयमागदे जो थीणगिद्धितियस्स अण्णदरिस्से पयडीए पढमसमयवेदगो त.स

समयवर्ती छद्मस्थ हुआ है उस समय प्रथम समयवर्ती अवधिलब्धियुक्त अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके मतिज्ञानावरण सम्बन्धी उत्कृष्ट प्रदेशोदयवृद्धि होती है । इसका कारण यह है कि जो जीव अवधिज्ञानकी वृद्धिके अभिमुख नहीं है उसके गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकारकी अपेक्षा तदभिमुख जीवका गुणश्रेणि रूप प्रदेशगुणकार असंख्यातगुणा होता है ।

शंका- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान- वह सूत्रकी अन्यथानुपत्तिसे जाना जाता है ।

परन्तु हीयमान अवधिक्षयोपशम युक्त अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उक्त गुणकारवृद्धि उससे असंख्यातगुणी है ।

इसी प्रकार (मतिज्ञानावरणके समान) श्रुतज्ञानावरण, मनःपर्ययज्ञानावरण, केवल-ज्ञानावरण, चक्षुदर्शनावरण, अचक्षुदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धिके स्वामीका कथन करना चाहिये ।

अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है ? उस अन्तिम समयवर्ती छद्मस्थके जिसकी अवधिलब्धि प्रथम समयमें नष्ट हुई है, उसको होती है । निद्रा और प्रचलाकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? वह उपशान्तकपाय जीवके होती है, जब वह अपने प्रथम समय संबंधी गुणश्रेणिशीर्षका वेदन करता है, तब उसके उन दोनों प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट वृद्धि होती है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उत्कृष्ट वृद्धि किसके होती है? जो अधःप्रवृत्तसंयत जीव तत्प्रायोग्य संक्लेशसे संयुक्त होकर अनन्तर कालमें सर्वविशुद्धिको प्राप्त होता है उस सर्वविशुद्ध जीवका जो गुणश्रेणिशीर्ष है उसके उदयको प्राप्त होनेपर जो स्त्यान-गृद्धि आदि तीनमेंसे अन्यतर प्रकृतिका प्रथम समयवर्ती वेदक होता है उसके उनकी उत्कृष्ट

* अप्रती ' अणहिमाहस्स ', काप्रती ' अणहिप्पायस्स ', ताप्रती ' अणहिमा (मु) हस्स ' इति पाठः ।

* ताप्रती ' ओहिणाणोहिदंसणावर (णा०) णं पुण ज्ञीयमाणोहि खओवसमाणं ' इति पाठः ।

† ताप्रती ' केवलणाणावर (णा) णं चक्खु ' इति पाठः । † ताप्रती ' वेदेदि ' इति पाठः ।

उक्क० वड्डी ।

चदुण्णं णाणावरणीयाणं तिण्णं दंसणावरणीयाणं उक्क० हाणी कस्स ? जो पढमसमयउवसंतकसाओ मदो संतो से काले देवो ॐ जादो तस्स अंतोमुहुत्तदेवस्स जाधे गुणसेडिसीसयं पढमसमयणिज्जिण्णं ताधे उक्क० हाणी । ओहिणाण-ओहिदंस-णावरणाणं उक्क० हाणी कस्स ? परिवदमाणयस्स सुहुमसांपराइयस्स जाधे अपच्छिमं उवसंतकसाय गुणसेडिसीसयं णिज्जरिज्जमाणं णिज्जिण्णं ताधे तस्स उक्क० हाणी । णवरि पढमसमयउप्पण्णओहिणाणस्से त्ति वत्तव्वं ।

पंचणाणावरणीय-णवदंसणावरणीयाणमुक्कस्समवट्टाणं कस्स ? जो अधापवत्तसंजदो तप्पाओग्गजहण्णसंकिलेसादो तप्पाओग्गमज्झिमपरिणाणमुक्कस्सविसोहिं गदो से काले वि तारिंसिं विसोहिं गदो पल्लिदो० असंखे० भागपडिभागबभहिया गुणसेडी जादो, जावे एदाणि गुणसेडिसीसयाणि पवेदेदि ताधे तस्स उक्कस्समवट्टाणं । एवं सेसाणं पि कम्माणं उक्कस्सवड्ढि-हाणि-अवट्टाणाणं सामित्तं जाणिऊण वत्तव्वं ।

जहण्णिया वड्डी हाणी अवट्टाणं च सव्वकम्माणमेक्को पदेसो अण्णदरस्स भवे । णवरि देवणिरयाउअं-तित्थयरणामकम्माणि मोत्तूण वत्तव्वं ।

वृद्धि होती है ।

चार ज्ञानावरणीय और तीन दर्शनावरणीयकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? जो प्रथम समयवर्ती उपशान्तकषाय जीव मरकर अनन्तर कालमें देव हो जाता है उस अन्तर्मुहूर्तवर्ती देवका गुणश्रेणिशीर्षं जब प्रथम समय निर्जराप्राप्त होता है तब उसके उक्त प्रकृतियोंकी उत्कृष्ट हानि होती है । अवधिज्ञानावरण और अवधिदर्शनावरणकी उत्कृष्ट हानि किसके होती है ? श्रेणिसे गिरते हुए सूक्ष्मसाम्परायिक जीवका जब निर्जीर्यमाण अन्तिम उपशान्तकषाय गुणश्रेणि-शीर्षं निर्जीर्ण हो चुकता है तब उसके उनकी उत्कृष्ट हानि होती है । विशेष इतना है कि अवधिज्ञान उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें, यह कहना चाहिये ।

पांच ज्ञानावरणीय और नौ दर्शनावरणीय प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान किसके होता है ? जो अधःप्रवृत्त संयत जीव तत्प्रायोग्य जघन्य संक्लेशसे तत्प्रायोग मध्यम परिणाम रूप उत्कृष्ट विशुद्धिको प्राप्त होता है व अनन्तर कालमें भी वैसी विशुद्धिको प्राप्त होता है जिससे गुणश्रेणि पल्योपमके असंख्यातवें भाग रूप प्रतिभागसे अधिक हो जाती है, जब वह इन गुणश्रेणिशीर्षकोंका वेदन करता है तब उसके उपर्युक्त प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अवस्थान होता है । इसी प्रकारसे शेष कर्मोंकी भी उत्कृष्ट वृद्धि, हानि व अवस्थानके स्वामित्वका जानकर कथन करना चाहिये ।

सब कर्मोंकी जघन्य वृद्धि, हानि व अवस्थान एक प्रदेश स्वरूप होकर अन्यतर जीवके होते हैं । विशेष इतना है कि देवायु, नारकायु और तीर्थंकर नामकर्मको छोडकर यह कथन करना चाहिये ।

एतो अप्पाबहुअं-पंचणाणावरण-चउदंसणावरण-पंचंतराइयाणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं।
 उक्कस्सिया हाणी असंखेज्जगुणा । उक्कस्सिया वड्ढी असंखे० गुणा । णिद्दा पयलाणं पि
 उक्कस्समवट्टाणं थोवं । उक्क० हाणी असं० गुणा । वड्ढी असंखेज्जगुणा । णिद्दाणिद्दा-
 पयला-पयला-थीणगिद्धि-मिच्छत्ताणंताणुबंधिचउक्काणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी
 असं० गुणा । हाणी विसेसा० । अट्टणं कसायाणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखे०
 गुणा। हाणी विसेसा० । सम्मत्त-णवणोकसाय-चट्टुसंजलणाणं णाणावरणभंगो । सम्मा-
 मिच्छत्तस्स मिच्छत्तभंगो । देव-णिरयाउआणं उक्क० हाणी कस्स? दसवस्ससहस्सा-
 उट्ठिदीएसु देव-णेरइएसु उववणणस्स दुसमयतभभवत्थस्स । वड्ढी अवट्टाणं वा णत्थि ।
 मणुस-तिरिक्खाउआणं उक्कस्समवट्टाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी विसेसा-
 साहिया । तिण्णं गइणामाणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखे० गुणा । हाणी विसे०।
 मणुसगइणामाए उक्कस्समवट्टाणं थोवं । हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा ।
 ओरालियसरीरणामाए मणुसगइभंगो । तेजा-कम्मइयसरीर-छसंठाण-पढमसंघडण-
 वण्ण-गंध-रस--फास--अगुरुअलहुअ--उवघाद--परघाद--उस्सास--पसत्थापसत्थ-
 विहायगइ-तस-बादर-पज्जत्त-पत्तेयसरीर--थिराथिर-सुहासुह-जसकित्ति-सुभग-
 आदेज्ज---सुस्सर---दुस्सर---णिमिणुच्चागोदाणं उक्कस्समवट्टाणं थोवं ।
 हाणी असंखे० गुणा । वड्ढी असंखे० गुणा । वेउव्विय---आहार

यहां अल्पबहुत्वका कथन करते हैं— पांच ज्ञानावरण, चार दर्शनावरण और पांच
 अन्तराय कर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । उत्कृष्ट हानि असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि
 असंख्यातगुणी है । निद्रा व प्रचलाका भी उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । उत्कृष्ट हानि असंख्यात-
 गुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि असंख्यातगुणी है । निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला, स्त्यानगृद्धि, मिथ्यात्व और
 अनन्तानुबंधिचतुष्कका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष
 अधिक है । आठ कषायोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष
 अधिक है । सम्यक्त्व, नौ नोकषाय और चार संज्वलन कषायोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान
 है । सम्यग्मिथ्यात्वकी प्ररूपणा मिथ्यात्वके समान है । देवायु और नारकायुकी उत्कृष्ट हानि
 किसके होती है ? वह दस हजार वर्षकी आयुस्थितिसे युक्त देवों व नारकियोंमें उत्पन्न हुए
 जीवके तद्भवस्थ होनेके द्वितीय समयमें होती है । उनकी वृद्धि व अवस्थान नहीं है । मनुष्यायु
 और तिर्यगायुका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि विशेष अधिक
 है । तीन गति नामकर्मोंका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष
 अधिक है । मनुष्यगति नामकर्मका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है ।
 वृद्धि असंख्यातगुणी है । औदारिकशरीर नामकर्मकी प्ररूपणा मनुष्यगतिके समान है । तैजस-
 शरीर, कार्मणशरीर, छह संस्थान, प्रथम संहनन, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात,
 परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येकशरीर-
 स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, यशकीर्ति, सुभग, आदेय, सुस्सर, दुस्वर, निर्माण और
 उच्चगोत्र; इनका उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । हानि असंख्यातगुणी है । वृद्धि

सरौर--पंचसंघडण--चदुआणुपुव्वी-आदावुज्जोव-थावर-सुहुम--अपज्जत्त-साहारण-
अजसकित्ति-दूभग-अणादेज्ज-णीचागोदाणमुक्कस्समवट्टाणं थोवं । वड्ढी असंखे०
गुणा । हाणी विसे० ।

देव-णिरयाउअ-तित्थयरवज्जाणं सव्वकम्माणं पि जहण्णवड्ढि-हाणि-
अवट्टाणाणि तुल्लाणि, एगपदेसपमाणत्तादो । तित्थयरणामाए जह० हाणी अधापम-
त्तकेवल्लिगुणसेडिसीसएसु उदयमागदेसु । जह० वड्ढी दुसमयकेवल्लिस्स । तदो हाणी
थोवा । जह० वड्ढी असंखे० गुणा । अवट्टाणं जहण्णमुक्कस्सं वा णत्थि । तित्थयर-
णामाए जह० हाणी थोवा । उक्क० हाणी विसेसा० । जह० वड्ढी असंखे० गुणा ।
उक्क० वड्ढी असंखे० गुणा । एवं पदणिकखेवो समत्तो । एत्तो वड्ढिउदए अप्पाब-
हुए कदे तदो उदए त्ति अणुयोगद्वारं समत्तं होदि ।

असंख्यातगुणी है । वैक्रियिकशरीर, आहारकशरीर, पांच संहनन, चार आनुपूर्वी, आतप,
उद्योत, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अयशकीर्ति, दुर्भग, अनादेय और नोचगोत्रका
उत्कृष्ट अवस्थान स्तोक है । वृद्धि असंख्यातगुणी है । हानि विशेष अधिक है ।

देवायु, नारकायु और तीर्थंकर प्रकृतियोंको छोडकर सभी कर्मोंकी जघन्य वृद्धि हानि
और अवस्थान तुल्य हैं; क्योंकि, वे एक प्रदेश प्रमाण हैं । तीर्थंकर नामकर्मकी जघन्य हानि
अधःप्रवृत्त केवली गुणश्रेणिशीर्षकोंके उदयप्राप्त होनेपर होती है । उसकी जघन्य वृद्धि द्वितीय
समयवर्ती केवलीके होती है । इस कारण उसकी हानि स्तोक है और जघन्य वृद्धि उससे असं-
ख्यातगुणी है । उसका जघन्य व उत्कृष्ट अवस्थान नहीं है । तीर्थंकर प्रकृतिकी जघन्य हानि
स्तोक है । उत्कृष्ट हानि विशेष अधिक है । जघन्य वृद्धि असंख्यातगुणी है । उत्कृष्ट वृद्धि
असंख्यातगुणी है । इस प्रकार पदनिक्षेप समाप्त हुआ । यहां वृद्धिउदय विषयक अल्पबहुत्वके
करनेपर उदय-अनुयोगद्वार समाप्त होता है ।

उदयानुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

